जनता के सामने प्रतिज्ञा की जाती है। लेकिन सत्ता में आने पर प्रतिज्ञा पूरी नहीं की जाती। पुनः क्रांतिकारी शासन की बागडोर प्राप्त करने के लिए जनता को फुसलाते है और उसका हृदय जीत लेते है उसके बाद वे सत्तारूढ़ होकर तानाशाही शासन करते है। फलतः पीड़ित और दलित जनता क्रांति कर बैठती है।

3) विभिन्न प्रकार की संविधानों में क्रांति का कारण:-

प्रजातंत्र में क्रांति का मूल कारण लोकनायक का उच्छृंखल व्यवहार है। कभी लोकनायक व्यक्तिगत रूप से धनिक वर्ग पर लाँछन लगाता है जिसके फलस्वरूप धनिक वर्ग के सभी व्यक्ति एकता के सूत्र में बंधकर संकट की स्थिति उत्पन्न कर देते है। लोकनायक जनता को भी धनिकों के विरुद्ध भड़का देता है, इससे भी क्रांति हो जाती है।

प्रजातंत्र निरंकुश तंत्र में भी बदल जाता है। प्राचीनकाल में लोकनायक सेनापति भी होता था। जिससे वह प्रजातंत्र को निरंकुश तंत्र में बदल देता था। मिलेरस, एथेंस एवं मेगारा की प्रजातांत्रिक सरकारें तानाशाही में परिवर्तित हो गई।

धनिकतंत्र में क्रांति बाह्य एवं आंतरिक कारणों से होती है। धनिक वर्ग में भी कुछ व्यक्तियों को शासन में भाग लेने का अवसर मिलता है। धनिकतंत्र में जब जनता का अधिक शोषण किया जाता है तो क्रांति हो जाती है। धनिकतंत्र में क्रांति आंतरिक कारणों से होती है। व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा उनमें से एक मुख्य कारण है जो किसी व्यक्ति को लोकनायक बनने के लिए प्रेरित करती है। धनिकतंत्र में फिजूल-खर्ची के कारण भी क्रांति होती है। शासक बनने पर धनिक सरकारी कोष का गबन करते है। वे किसी इससे

व्यक्ति को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए निरंकुश बनने में मदद पहुंचा सकते है। अरस्तु का कहना है कि जब धनिक वर्ग के ही शासन सत्ता कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित रहती है, तथा अन्य व्यक्तियों को शासनाधिकार से वंचित किया जाता है, तो ऐसी स्थिति में क्रांति की संभावना सदा बनी रहती है।

धनिकतंत्र में युद्ध तथा शांति की अवस्था में भी क्रांति होती है। जनता में विश्वास न रहने के कारण युद्ध के समय धनिकतंत्र विदेशी सेनाएँ लाते है। अरस्तु का कथन है कि कुलीनतंत्र भी एक प्रकार का धनिकतंत्र है, क्योंकि दोनों प्रकार की शासन पद्धतियों में शासन का भार कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में रहता है। दोनों में अंतर इतना है कि धनिकतंत्र के शासक संपत्ति शाली तथा कुलीनतंत्र के शासक गुणी होते है। अधिकांश जनता शासन के अधिकार से वंचित रहती है। जब उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि वे पंच शासकों के समान ही अच्छे गुणी एवं शासन करने में योग्य है तो क्रांति कर बैठते है।

① महान व्यक्तियों को शासन के अवसर नहीं देने पर वे क्रांति कर बैठते है। वीर पुरुषों का अनादर करने पर भी क्रांति फूट पड़ती है।

structure

② जब किसी के कारण कुछ व्यक्ति अत्यधिक अत्यधिक अमीर तथा कुछ व्यक्ति गरीब हो जाते है, तो क्रांति ऐसी स्थिति में भी हो जाती है।

③ जब कोई महान पुरुष अधिक महान होकर संपूर्ण शासन अपने हाथों में लेकर शासन करना चाहते है तो ऐसी स्थिति में भी क्रांति हो जाती है।

अरस्तु ने राजतंत्र को एक प्रकार का कुलीनतंत्र ही माना है। राजतंत्र के विनाश में उन सभी कारणों का हाथ रहता है, जिससे प्रजातंत्र, कुलीनतंत्र तथा धनिकतंत्र में क्रांति होती है। जब राजतंत्र जनहित को भूल जाता है, तो जनता क्रांति कर बैठती है। जब कभी साहसी व न्यायी व्यक्ति अपमानित किया जाता है तो उसमे प्रतिशोध

की भावना जागृत हो जाती है, वह राजा के प्रति विद्रोह कर बैठता है। अरस्तू का कहना है कि जिन कारणों से धनिकतंत्र तथा प्रजातंत्र का विनाश होता है, उन्हीं कारणों से निरंकुशतंत्र में विद्रोह फैलता है। जब शासक परिवार के सदस्य आपस में झगड़ पड़ते हैं तो निरंकुश तंत्र का स्वरूप नाश हो जाता है। घृणा और तिरस्कार निरंकुशतंत्र के पतन के दो बहुत बड़े कारण हैं। अत्याचारी शासक सुरा-सुन्दरी में लिप्त रहता है। इसका प्रभाव जनता पर बहुत बुरा पड़ता है। वह जनता के क्रोध का शिकार बन जाता है।

आलोचना :—

अरस्तू के क्रांति विषयक अवधारणा की आलोचना की गई है। यह कहा जाता है कि उसके क्रांति संबंधी विचार असम्बद्ध हैं। उसने प्रारम्भ में क्रांति का विवेचन ठीक किया है, परन्तु प्रजातंत्र तथा धनिकतंत्र को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है, अरस्तू ने इस पर पृथक रूप से विचार नहीं किया है।

(2) राज्य की क्रांति में साम्राज्यवादी लिप्सा का भी बहुत बड़ा हाथ रहा है, लेकिन अरस्तू ने इस पर कुछ नहीं बतलाया।

(3) राज्य परिवर्तन में व्यापारियों का भी हाथ रहा है, लेकिन अरस्तू ने राज्य परिवर्तन के इस कारण को नहीं बतलाया है। और साथ ही उसने धर्म को राज्य क्रांति का कारण नहीं माना है।

अरस्तू ने निरंकुश तंत्र की रक्षा के लिए दो प्रकार के उपाय बतलाए हैं — परंपरावादी साधन तथा इसके प्रतिकूल उपाय। दोनों उपाय के अध्ययन से पता चलता है कि दोनों एक-दूसरे के प्रतिकूल हैं। दूसरे साधन को अपनाने पर निरंकुश शासक निरंकुश नहीं रहता, बल्कि वह एक राजा बन

Page No.
Date : / /200

जाता है। एक ओर निरंकुश शासक उत्साही पुरुषों की हत्या करवा देते हैं तथा दूसरी ओर योग्य व्यक्तियों को सम्मान देते हैं। अतः इस तरह उसके विचारों में विरोधाभास पाया जाता है।

छोटी - घटनाओं
अरस्तू ने छोटी - 2 घटनाओं को अत्यधिक महत्व दिया है। वह कहता है कि कभी - 2 अत्यंत ही क्षुद्र घटनाएँ भी क्रांति उत्पन्न करती हैं। लेकिन आजकल ऐसी क्षुद्र घटनाओं का कोई महत्व नहीं है।

आज सरकार के रूप में परिवर्तन हो गया है। राजतंत्र, कुलीनतंत्र, धनिकतंत्र तथा निरंकुश तंत्र का प्रायः लोप हो गया है। प्रजातंत्र का अभी भी आदर है लेकिन अभी उसका स्वरूप बदल गया अरस्तू पर क्रांति का विचार पुराना पड़ गया है, उसमें संशोधन की आवश्यकता है।

निष्कर्ष ! — यह कहा जा सकता है कि अरस्तू के क्रांति संबंधी विचार यूनान के विभिन्न नगर राज्यों के वास्तविक तथ्यों एवं घटनाओं पर आधारित है। उसके क्रांतिकारी विचार मौलिक व्यवहारिक, वास्तविकतया शाश्वत है। शायद ही किसी राजनीतिक दार्शनिक ने क्रांति पर विचार व्यक्त किया है। अरस्तू के विचारों के सहारे ही समाजवाद, पूँजीवाद, साम्यवाद से होनेवाली क्रांतियों का मूल्यांकन किया जा सकता है।